

सेज-1 राजनीति शास्त्र पाठ-2 सभा में सामेल्यारी की - कार्य प्रणाली
अभिलेखित ठीकरी प्रश्न =)

Ques संघीय शासन व्यवस्था के दो उद्देश्य बताएँ?
संघीय शासन व्यवस्था के दो उद्देश्य इस प्रकार हैं।

- (i) क्षेत्रीय एवं अन्य विविधताओं का आदर करना
- (ii) राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा करना एवं उसे बढ़ावा देना।

Ques संघीय शासन की कोई दो विशेषताएँ बताएँ।
संघीय शासन व्यवस्था के दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

- (i) संघीय शासन व्यवस्था के सर्वोच्च एवं अन्य अंगों के बीच एक केन्द्र सरकार एवं उसकी विभिन्न अनुसंगिक केन्द्रों के बीच बाँट दी जाती है।
- (ii) संघीय व्यवस्था में दोहरी सरकार होती है। एक केन्द्रीय सरकार तथा दूसरी प्रांतीय या क्षेत्रीय सरकार।

Ques संघ राज्य का अर्थ बताएँ।

- => जब सभा का विभाजन क्षेत्राधिकार आधारित हो, केन्द्रीय राज्य या क्षेत्रीय सरकार एवं स्थानीय सरकारों के बीच विपरीत कर दी जाती है तो संघीय राज्य कहलाती है। किन्तु सर्वोच्च सभा केन्द्र के पास होती है।

Ques सभा का विकेन्द्रीकरण का क्या अर्थ है?

- => सभा के विकेन्द्रीकरण का तात्पर्य सभा को एक स्थान पर केन्द्रीकृत न कर उसका विभिन्न स्तरों पर विभजित किया जाना है। भारत में केन्द्र एवं राज्यों के मध्य शक्ति विभाजन इसका उदाहरण है।

Ques संभवतः सूची से आप क्या समझते हैं?

- => हमारे संविधान की सातवीं अनुसूची में केन्द्र एवं राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन किया जाता है। संभवतः सूची में उन मामलों को शामिल

दिखा गया है जिन पर दानने बनाने का अधिकार
कुन्द् व राज्यों दोनों को प्राप्त है।

प्रश्न 66. पंचायती राज से आप क्या समझते हैं?

अ आज का युग लोकतंत्र का युग है। लोकतंत्र में
शासन के विकेंद्रीकरण पर विशेष बल दिया
गया है। भारतीय प्रशासन में भी विकेंद्रीकरण के
सिद्धान्त को अपनाए जाने की आवश्यकता प्राप्ती
हुई। इस सिद्धान्त को कार्यरूप देने के लिये उद्देश्य
से भारत की संघ सरकार वलवंतराज मेहरा समिति
का गठन किया। इस समिति ने यह सिफारिश की
कि भारत में पंचायती राज
की जाए। इसके अनुसार ग्राम प्रखंड एवं जिला
स्तर पर स्थानीय व्यक्तियों का गठन किया जाए।

प्रश्न 67. ग्राम पंचायत के प्रमुख अंगों में से दो

1) ग्राम पंचायत के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं

- (1) ग्रामसभा (2) कार्यकारिणी समिति (3) पंचायत-
सेवक (4) ग्राम दहा दल

Ques 1. जिला परिषद् के तीन कार्य लिखें।

जिला परिषद् के तीन कार्य निम्नलिखित हैं।

- (i) पंचायत समिति एवं ग्राम पंचायत के बीच संबंध स्थापित करना।
- (ii) विभिन्न पंचायत समितियों के द्वारा तैयार की गई योजनाओं को संतुलित करना।
- (iii) शिक्षा संस्थाओं की स्थापना तथा उसका विकास करना।

Ques 2. लोकतंत्र में सत्ता की सामेदारी का क्या अर्थ है?

- => लोकतंत्र में सत्ता की सामेदारी का अर्थ है कि राजनीतिक प्रक्रिया में नागरिक आधिकारिक भागीदारी करें। लोकतंत्र में चुनाव शैली मतदान आदि माध्यमों द्वारा जनता राजनीतिक सत्ता में भागीदारी करती है। लोकतंत्र में सत्ता में जनता के विभिन्न वर्गों की जितनी अधिक सामेदारी होगी लोकतंत्र उतना ही मजबूत व शुद्ध होगा। सत्ता में सामेदारी हेतु राजनीतिक जागरूकता अनिवार्य है।

Ques 3. सत्ता की सामेदारी लोकतंत्र में क्या महत्व रखती है?

- => सत्ता की सामेदारी ही लोकतंत्र का मूलमंत्र है। लोकतंत्र में जनता ही सारी शक्तियाँ का स्रोत एवं उपभोग करनेवाली होती है। लोकतंत्र में समाज के विभिन्न समूहों एवं विचारों को उचित सम्मान दिया जाता है। लोकतंत्र में ही विभिन्न सामाजिक समूहों के हितों एवं समस्याओं का सम्मान कर उनके बीच मतभेद तथा टकराव को दूर किया जाता है।

Ques 4. संघीय शासन व्यवस्था की विशेषताओं का उल्लेख करें।

- => संघीय शासन व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

- पेज 4
- (i) संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च स्तर केन्द्र सरकार और उसकी विभिन्न अनुसूचित इकाइयों के बीच बँट जाती है।
 - (ii) संघीय व्यवस्था में दोहरी सरकार होती है। एक केन्द्रीय सरकार जिसके अधिकार क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के विषय होते हैं, दूसरे स्तर पर प्रांतीय या स्थानीय सरकारों जिनके अधिकार क्षेत्र में स्थानीय महत्व के विषय होते हैं।
 - (iii) प्रत्येक स्तर की सरकार अपने क्षेत्र में संचालन होती है, और अपने-अपने कार्यों के लिए लोगों के प्रति जवाबदेह या उत्तरदायी होती है।
 - (iv) अलग-अलग स्तर की सरकार एक ही नागरिक समूह पर शासन करती है।

उपस्था: पंचायत समिति के कार्यों का वर्णन करें?

- 1) पंचायत समिति सभी ग्राम पंचायतों की वार्षिक योजनाओं पर विचार विमर्श करती है तथा समेकित योजना को जिला परिषद में प्रस्तुत करती है। यह हेल्वे कार्यक्रमों का संपादन एवं निष्पादन करती है। जो संघ, और जिला परिषद इसके नीचे होती है। इसके अतिरिक्त सामुदायिक विकास कार्य एवं प्राकृतिक आपदा के समर्थन एवं प्रबंधन करना भी इसकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। पंचायत समिति अपना अधिकारों कार्य स्थानीय समितियों द्वारा करती है।

Ques 6 नगर निगम की आय के प्रमुख साधनों का वर्णन करें।

⇒ नगर निगम अपने कार्यों के संचालन हेतु कई प्रकार से आय अर्जित करता है। नगर निगम कई प्रकार के कर ~~कर~~ लगाता है। विभिन्न प्रकार के करों में मकान कर, गलकर, संचालन कर, पराओं पर कर, छोटे वाहनों पर कर, टैला, रिक्शा आदी सभी कर प्रमुख हैं।

इन करों से प्राप्त आय की राशि इतनी कम होती है कि नगर-निगम का कार्य इससे नहीं चल पाता। जिसके चलते राज्य सरकार समय-समय पर आर्थिक अनुदान देकर निगम के वार्षिक बजट की पूर्ति करती है। नगर निगम विभिन्न प्रकार के नीलामी के माध्यम से भी आय अर्जित करता है।

Ques 7 नगर परिषद के प्रमुख कार्यों का वर्णन करें।
नगर परिषद के अनिवार्य एवं ऐच्छिक कार्य हैं।

अनिवार्य कार्य - (i) नगर की सफाई

(ii) रोशनी का प्रबन्ध

(iii) पाने का पानी की व्यवस्था

(iv) सड़क निर्माण एवं मरम्मत

(v) नालियों की सफाई

(vi) प्राथमिक विद्यार्थियों की व्यवस्था

(vii) महामारी से बचाव एवं

टिप्पा लगवाने का प्रबन्धन

(viii) अस्पताल खोलना

(ix) आग से सुरक्षा

(x) रमशान आद का प्रबन्ध करना एवं

(xi) जनम मृत्यु का निबन्धन

ऐतिहासिक कार्य

- ① सड़क निर्माण
- ② गली-नली निर्माण
- ③ बसने योग्य भूमि का निर्माण
- ④ गरीबों के लिए गृह-निर्माण
- ⑤ बिजली का प्रबन्ध
- ⑥ प्रदर्शनी लगाना

8. प्रश्न - एकात्मक राज्य किसे कहते हैं?

या, एकात्मक राज्य के प्रधान लक्षणों को बताएँ।

उत्तर - राज्य प्रायः दो प्रकार के होते हैं, जिन्हें संघात्मक राज्य एवं एकात्मक राज्य कहते हैं। एक ओर जहाँ संघात्मक राज्य में शासन की विकेंद्रित पद्धति अपनाई जाती है, वहीं दूसरी ओर एकात्मक राज्य में राज्य की समस्त शक्ति ~~केन्द्रित~~ केन्द्रीय सरकार में केन्द्रित होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समस्त सत्ता का केन्द्रीयकरण एकात्मक राज्य का प्रधान लक्षण होता है।

इसके विपरीत स्थिति वाले राज्यों में शासन की विकेंद्रित पद्धति अपनाई जाती है। विकेंद्रित शासन व्यवस्था में सत्ता की साझेदारी में अधिकाधिक लोगों को शामिल किया जाता है। एकात्मक राज्यों की परंपरा बलवती होती जा रही है तथा उसके स्थान पर संघात्मक राज्यों की परंपरा बलवती होती जा रही है। संघात्मक राज्यों की शासन व्यवस्था एकात्मक राज्यों की तुलना में विशेष लोकतांत्रिक होती है। आइरलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, स्विट्जरलैंड जैसे देश इसके उदाहरण हैं। श्रीलंका में एकात्मक शासन व्यवस्था की अपनाना गंगा है।